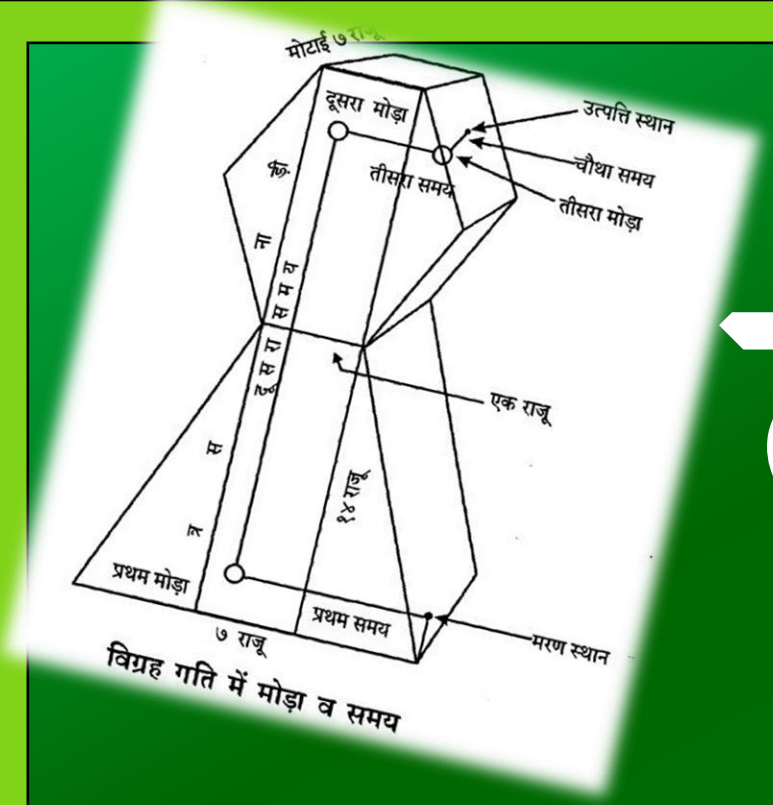

विग्रह गति में मोड़ा व समय

तत्त्वार्थ सूत्र

द्वितीय अध्याय

Presentation Developed By: श्रीमति सारिका छाबड़ा

विषय वस्तु

प्रकरण	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
जीव के असाधारण भाव	1 - 7	7
जीव का लक्षण	8 - 9	2
जीव के भेद	10 - 14	5
इन्द्रियाँ	15 – 24	10
विग्रह गति	25 - 30	6
जन्म और योनी	31 - 35	5
शरीर	36 - 49	14
वेद	50 – 52	3
आयु अपवर्तन से मरण	53	1

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिक-पारिणामिकौ च ॥1॥

❁औपशमिक, क्षायिक, मिश्र अर्थात् क्षायोपशमिक, औदयिक और पारिणामिक – ये जीव के 5 असाधारण भाव हैं ।

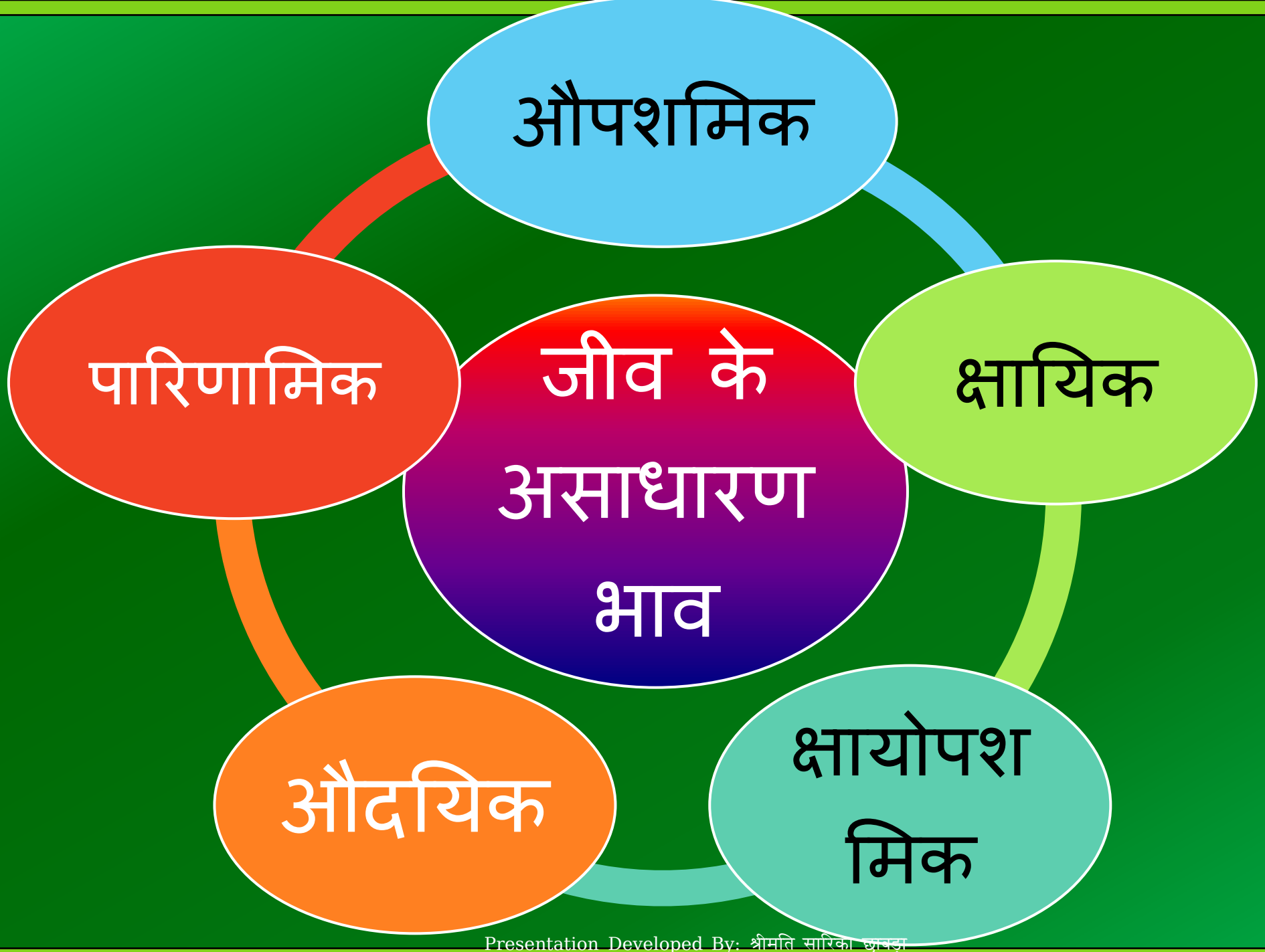
औपशमिक
क्षायिक
क्षायोपशमिक
औदयिक
पारिणामिक
जीव के असाधारण भाव

जीव के असाधारणभाव

जीव के अतिरिक्त
अन्य द्रव्यों में न पाये जाने वाले
अर्थात् मात्र जीव में ही पाये जाने वाले भावों को
जीव के असाधारणभाव कहते हैं ।

उपशम	औपशमिक
क्षय	क्षायिक
क्षयोपशम	क्षायोपशमिक
उदय	औदयिक
परिणाम	पारिणामिक
से संबंध रखे, वह है	

औपशमिक भाव

मोहनीय कर्म के

अंतरकरणरूप उपशम के निमित्त से

होनेवाले जीव के भावों को

औपशमिक भाव कहते हैं ।

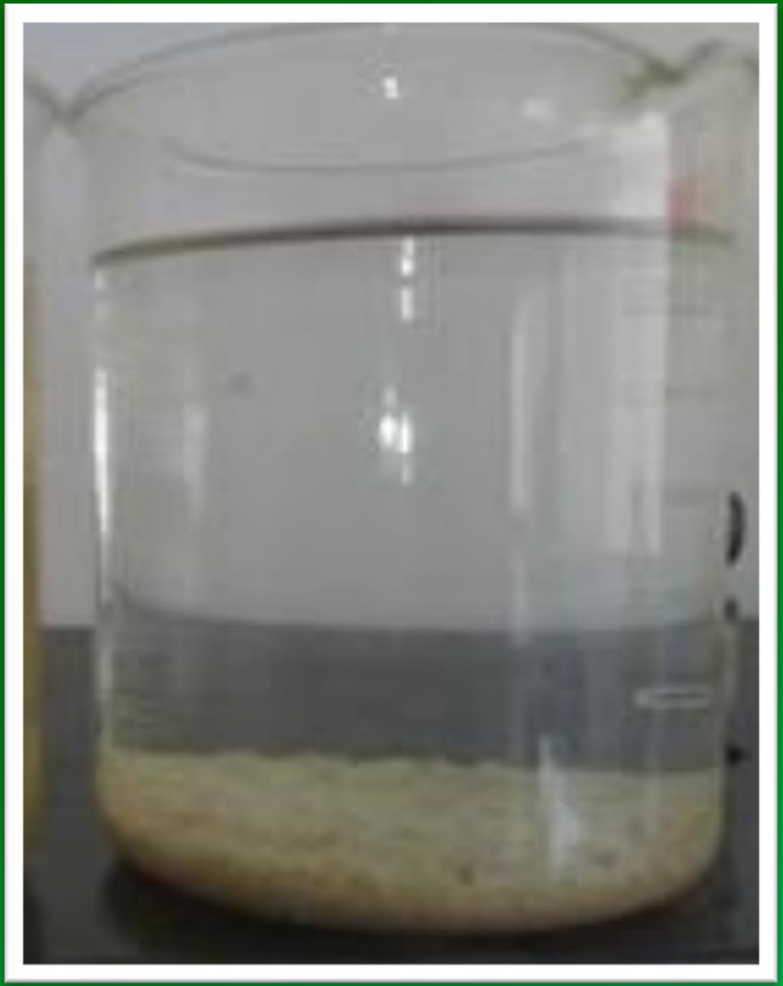

क्षायिक भाव

कर्मक्षय के समय में होनेवाले

एवं भविष्य में अनंत काल पर्यंत रहने वाले

जीव के शुद्धभावों को

क्षायिक भाव कहते हैं ।

क्षायोपशमिक भाव

कर्म के क्षयोपशम के निमित्त से होनेवाले

जीव के भावों को

क्षायोपशमिक भाव कहते हैं ।

औदयिक भाव

कर्मोदय के निमित्त से होनेवाले

जीव के भावों को

औदयिक भाव कहते हैं ।

पारिणामिक भाव

पूर्णतः कर्मनिरपेक्ष अर्थात्

कर्म के उपशम, क्षय, क्षयोपशम और उदय से निरपेक्ष

जीव के परिणामों को

पारिणामिक भाव कहते हैं ।

विशेष

- शुरू के 4 भाव निमित्त की प्रधानता से कहे हैं और अंतिम भाव योग्यता की प्रधानता से कहा है
- इन 5 भावों के जीवों की संख्या के क्रम के कारण से सूत्र में इनका क्रम इस प्रकार रखा गया है

द्वि-नवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमम् ॥2॥

❁इनके भेद क्रम से दो, नौ, अठारह, इक्कीस और तीन हैं ।

भाव

औपशमिक	क्षायिक	क्षायोपशमिक	औदयिक	पारिणामिक
2	9	18	21	3

सम्यक्त्व-चारित्रे ॥3॥

❁ औपशमिक भाव के 2 भेद हैं – उपशम सम्यक्त्व और उपशम चारित्र ।

5 भावों को समझने के लिए आवश्यक कर्म प्रकतियाँ -

कर्म

- घातिया(47)
  - ज्ञानावरण (5)
  - दर्शनावरण (9)
  - मोहनीय (28)
    - दर्शन मोहनीय (3)
      - मिथ्यात्व
      - सम्यग्मिथ्यात्व
      - सम्यक्त्व प्रकृति
    - चारित्र मोहनीय (25)
      - कषाय (16)
      - नोकषाय (9)
  - अतराय (5)
- अघातिया
  - आयु
  - नाम
  - गोत्र
  - वेदनीय

औपशमिक भाव

- सम्यक्त्व
  - प्रथमोपशम
    - मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी का उपशम
  - द्वितीयोपशम
    - श्रेणी चढने के पूर्व दर्शन मोहनीय का उपशम
- चारित्र

अनादि मिथ्यादृष्टि के सम्यक्त्व की प्रक्रिया

4 लब्धि प्राप्त कर

5वी लब्धि के 3 करण परिणाम कर

उपशम सम्यक्त्व प्राप्त करे

5 लब्धि

क्षयोपशम लब्धि	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त होना
विशुद्ध लब्धि	कषायों की मंदता होना, धर्मानुराग रूप शुभ परिणामों की प्राप्ति
देशना लब्धि	6 द्रव्य, 7 तत्त्व आदि का उपदेश देने वाले आचार्यादि का लाभ, उनके उपदेश की प्राप्ति, उपदेशित पदार्थ को धारण करने की प्राप्ति
प्रायोग्यता लब्धि	बंध और सत्ता दोनों के कर्मों की स्थिति अंत:कोड़ाकोड़ी सागर करना
करण लब्धि	3 करण परिणाम होते हैं – अध:प्रवृत्तकरण, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण

औपशमिक सम्यक्त्व

दर्शन मोहनीय की 1 या 2 या 3 प्रकृतियों का प्रशस्त उपशम करने पर तथा

अनन्तानुबन्धी की 4 प्रकृतियों का अप्रशस्त उपशम होने पर

होने वाले जीव के सम्यक्त्व परिणाम को औपशमिक सम्यक्त्व कहते हैं ।

उपशम किसे कहते हैं?

कर्मों का अपने परिणामों के निमित्त से आगे-पीछे करना वह उपशम (प्रशस्त उपशम) कहलाता है |

उससे जो gap/empty space बनेगा तब उस gap / empty space में उस-उस कर्म प्रकृति का उदय नहीं रहेगा |

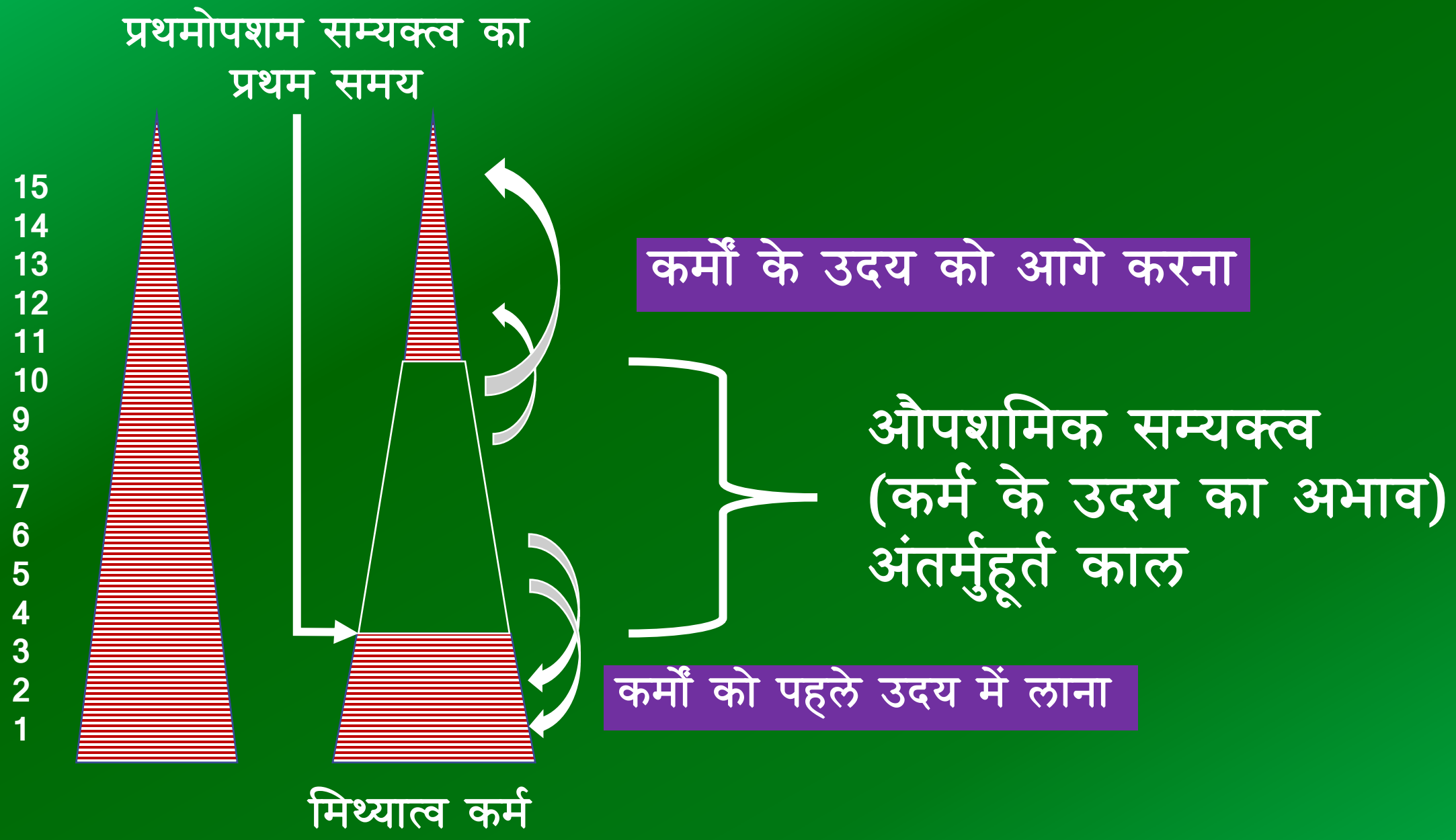
प्रथमोपशम सम्यक्त्व का
प्रथम समय
15
14
13
12
11
10
9
8
7
6
5
4
3
2
1
कर्मों के उदय को आगे करना
औपशमिक सम्यक्त्व
(कर्म के उदय का अभाव)
अंतर्मुहूर्त काल
कर्मों को पहले उदय में लाना
मिथ्यात्व कर्म

औपशमिक सम्यक्त्व से जाने के 4 मार्ग

अनंतानुबंधी का उदय आने पर

सासादन

सम्यग्मिथ्यात्व

सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति का उदय आने पर

मिथ्यात्व

मिथ्यात्व प्रकृति का उदय आने पर

औपशमिक सम्यक्त्व

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व

सम्यक्त्व प्रकृति का उदय आने पर

औपशमिक भाव के बारे में कुछ तथ्य:

- ये भाव temporary शुद्धभाव होता है ।
- 4 से 11 गुणस्थान तक ये भाव हो सकते हैं ।
- दर्शन और चारित्र मोहनीय की ही उपशमना हो सकती है ।

ज्ञान-दर्शन-दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणि च ॥4॥

❁क्षायिक भाव के नौ भेद हैं – क्षायिक सम्यक्त्व, चारित्र, ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य ।

कर्मों का बंध, उदय और सत्ता से नाश होना क्षय कहलाता है

क्षायिक भाव

क्षायिक सम्यक्त्व	क्षायिक चारित्र	क्षायिक ज्ञान	क्षायिक दर्शन
क्षायिक दान	क्षायिक लाभ	क्षायिक भोग	क्षायिक उपभोग
क्षायिक वीर्य			

क्षायिक सम्यक्त्व	•मोहनीय की 7 प्रकृतियों के क्षय से प्रगट क्षायिक सम्यक्त्व
क्षायिक चारित्र	•समस्त मोहनीय कर्म के अभाव से प्रगट
क्षायिक ज्ञान	•ज्ञानावरण के अत्यंत क्षय से प्रगट केवलज्ञान

क्षायिक दर्शन

- दर्शनावरण के अत्यंत क्षय से प्रगट केवलदर्शन

क्षायिक दान

- दानान्ताराय कर्म का अत्यंत क्षय होने से दिव्यध्वनी आदि द्वारा अनंत प्राणियों का उपकार करने वाला क्षायिक दान

क्षायिक लाभ

- लाभान्ताराय के क्षय से केवली भगवान के शरीर का बिना भोजनादि ग्रहण किये बने रहना

क्षायिक भोग	• भोगान्तराय का अत्यंत क्षय से सुगन्धित पवन का बहना, पुष्प वृष्टि आदि क्षायिक भोग
क्षायिक उपभोग	• उपभोगान्तराय के अत्यंत क्षय से सिंहासन, 3 छत्र, भामंडल आदि का होना क्षायिक भोग
क्षायिक वीर्य	• वीर्यान्तराय कर्म के अत्यंत क्षय से क्षायिक वीर्य प्रगट होना

ज्ञानाज्ञानदर्शन-लब्धयश्चतुस्त्रित्रि-पञ्च-भेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च॥5॥

❁क्षायोपशमिक भाव के 18 भेद हैं – 4 ज्ञान, 3 अज्ञान, 3 दर्शन, 5 लब्धि, क्षायोपशामिक सम्यक्त्व, क्षायोपशामिक चारित्र, संयमासंयम ।

क्षय

+

उपशम

→

क्षयोपशम

क्षयोपशम किसे कहते हैं?

क्षय	वर्तमानकालीन सर्वघाति स्पर्धकों का उदयाभावी क्षय
उपशम	भविष्य में उदय में आने योग्य सर्वघाति स्पर्धकों का सदवस्थारूप उपशम
उदय	वर्तमानकालीन देशघाती स्पर्धकों का उदय

इन तीनरूप कर्म की अवस्था को क्षयोपशम कहते हैं ।

उदयाभावी क्षय

सर्वघाती प्रकृतियों का अनंत गुणा हीन होकर देशघाती में परिवर्तित होकर उदय में आने को उदयाभावी क्षय कहते हैं |

इसमें सर्वघाति स्पर्धक उदय में आने के एक समय पूर्व देशघाती में परिवर्तित होते हैं |

उदयाभावी क्षय

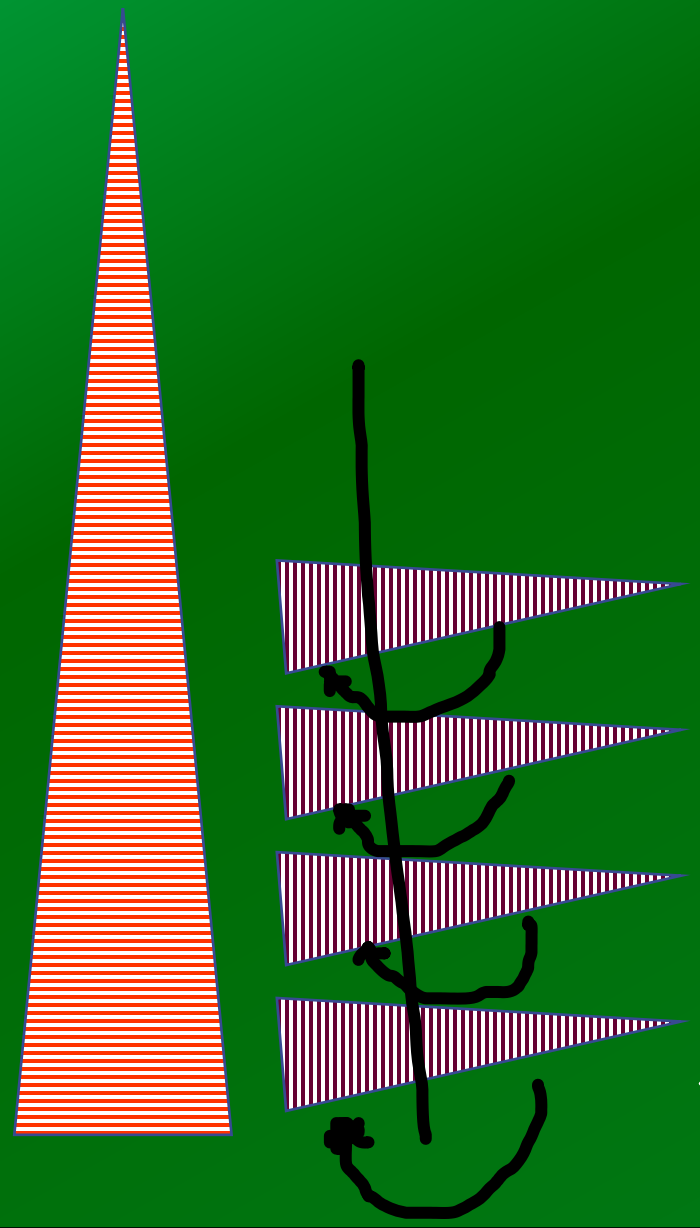

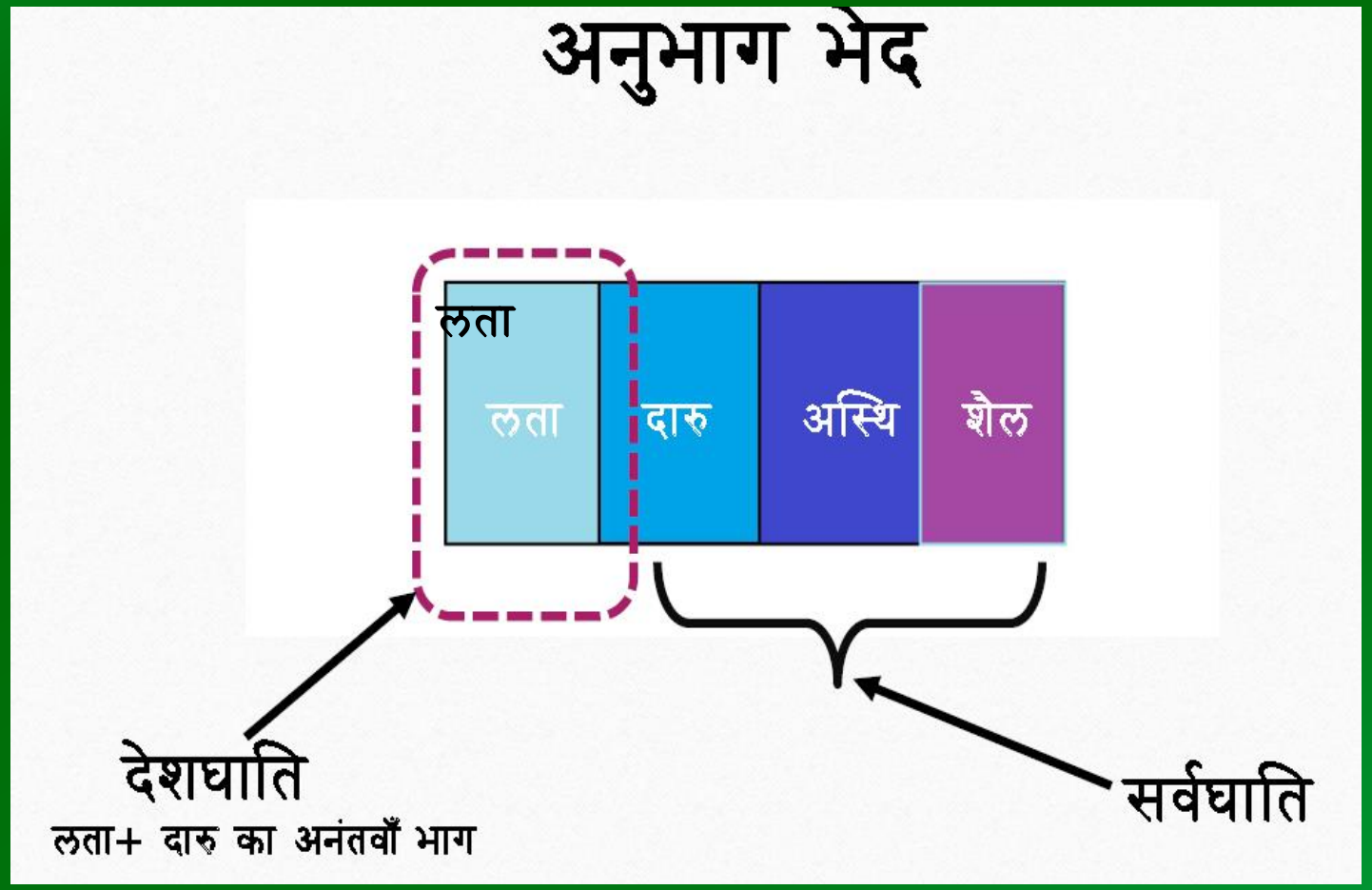

अनुभाग का अनंत गुणा हीन होना

सर्वघाति का देशघाति रूप उदय होना

सदवस्थारूप उपशम

वर्तमान समय को छोड़कर

भविष्य में उदय में आने वाले कर्मों के

सत्ता में रहने को

सदवस्थारूप उपशम कहते हैं ।

क्षायोपशमिक भाव

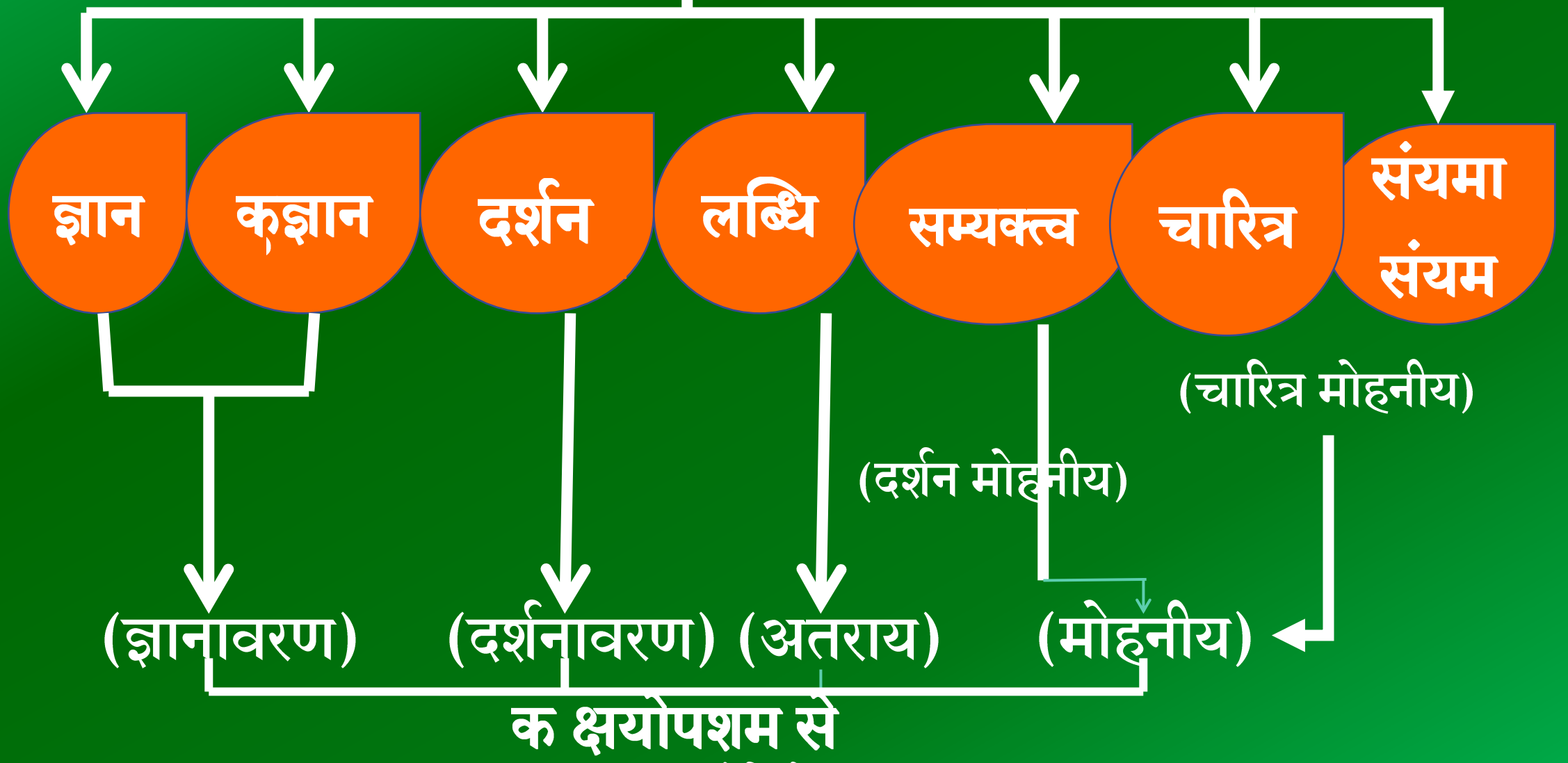
ज्ञान
कुज्ञान
दर्शन
लब्धि
सम्यक्त्व
चारित्र
संयमा संयम
(चारित्र मोहनीय)
(दर्शन मोहनीय)
(ज्ञानावरण)
(दर्शनावरण)
(अतराय)
(मोहनीय)
क क्षयोपशम से

3 इन्द्रिय जीव के मतिज्ञान का क्षयोपशम

3 इन्द्रिय (स्पर्शन, रसना, घ्राण) सम्बंधित मतिज्ञान का क्षयोपशम

बाकी की 2 इन्द्रिय (चक्षु और कर्ण) इन्द्रिय सम्बंधित सर्वघाती का उदय

मतिज्ञान में क्षयोपशम

- मतिज्ञान के सर्वघाति स्पर्धकों का
  - वर्तमान में
    - उदयाभावी क्षय
  - आगामी का
    - सदवस्थारूप उपशम
- मतिज्ञान के देशघाति स्पर्धकों का
  - वर्तमान में
    - उदय

4 ज्ञान

- मतिज्ञान
- श्रुतज्ञान
- अवधिज्ञान
- मनःपर्ययज्ञान

3 कुज्ञान

- कमतिज्ञान
- कश्रुतज्ञान
- कअवधिज्ञान

3 दर्शन

- चक्षुदर्शन
- अचक्षुदर्शन
- अवधिदर्शन

5 लब्धि

- दान
- लाभ
- भोग
- उपभोग
- वीर्य

क्षायोपशमिक सम्यक्त्व कैसे ?

मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, अनंतानुबंधी 4 का

उदयाभावी क्षय

सदवस्थारूप उपशम

तत्त्वार्थ श्रद्धान

सम्यक्त्व प्रकृति का

उदय

चल मलादि दोष

अनंतानुबंधी	अप्रत्याख्यानावरण	प्रत्याख्यानावरण	संज्वलन
तत्त्वार्थश्रद्धानरूप सम्यक्त्व का घात हो	देशचारित्र का घात हो	सकलचारित्र का घात हो	यथाख्यातचारित्र का घात हो
अनंत संसार (मिथ्यात्व) के साथ संबंध कराये	किंचित् त्याग न होने दे	पूर्ण त्याग न होने दे	जो संयम के साथ प्रज्वलित रहे

क्षायोपशमिक चारित्र कैसे ?

अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान का

उदयाभावी क्षय

सदवस्थारूप उपशम

वीतरागता

संज्वलन प्रकृति का

उदय

यथाख्यात चारित्र का घात

संयमासंयम कैसे ?

अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यान का

उदयाभावी क्षय

सदवस्थारूप उपशम

वीतरागता

प्रत्याख्यान सर्वघाती , संज्वलन देशघाती प्रकृति का

उदय

सकल चारित्र का घात

गति-कषाय-लिंग-मिथ्यादर्शनाज्ञानासंयतासिद्धलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैक-षड्भेदाः॥6॥

- औदयिक भाव के 21 भेद हैं- 4 गति, 4 कषाय, 3 लिंग, मिथ्यादर्शन,अज्ञान, असंयत, असिद्ध, 6 लेश्या।

औदयिक भाव

कर्मों के फलदान का सामर्थ्य प्रगट होना उदय है,

उदय में जो हो वह औदयिक भाव है |

गति नाम कर्म के उदय से

4 गति

- नरकगति
- तिर्यंचगति
- मनुष्यगति
- देवगति

कषाय कर्म के उदय से

4 कषाय

- कोध
- मान
- माया
- लोभ

वेद कषाय कर्म के उदय से

3 वेद

स्त्रीवेद

पुरुषवेद

नपुंसक वेद

लेश्या

कषायों से अनुरंजित

मन, वचन और काय की प्रवृत्ति को

लेश्या कहते हैं |

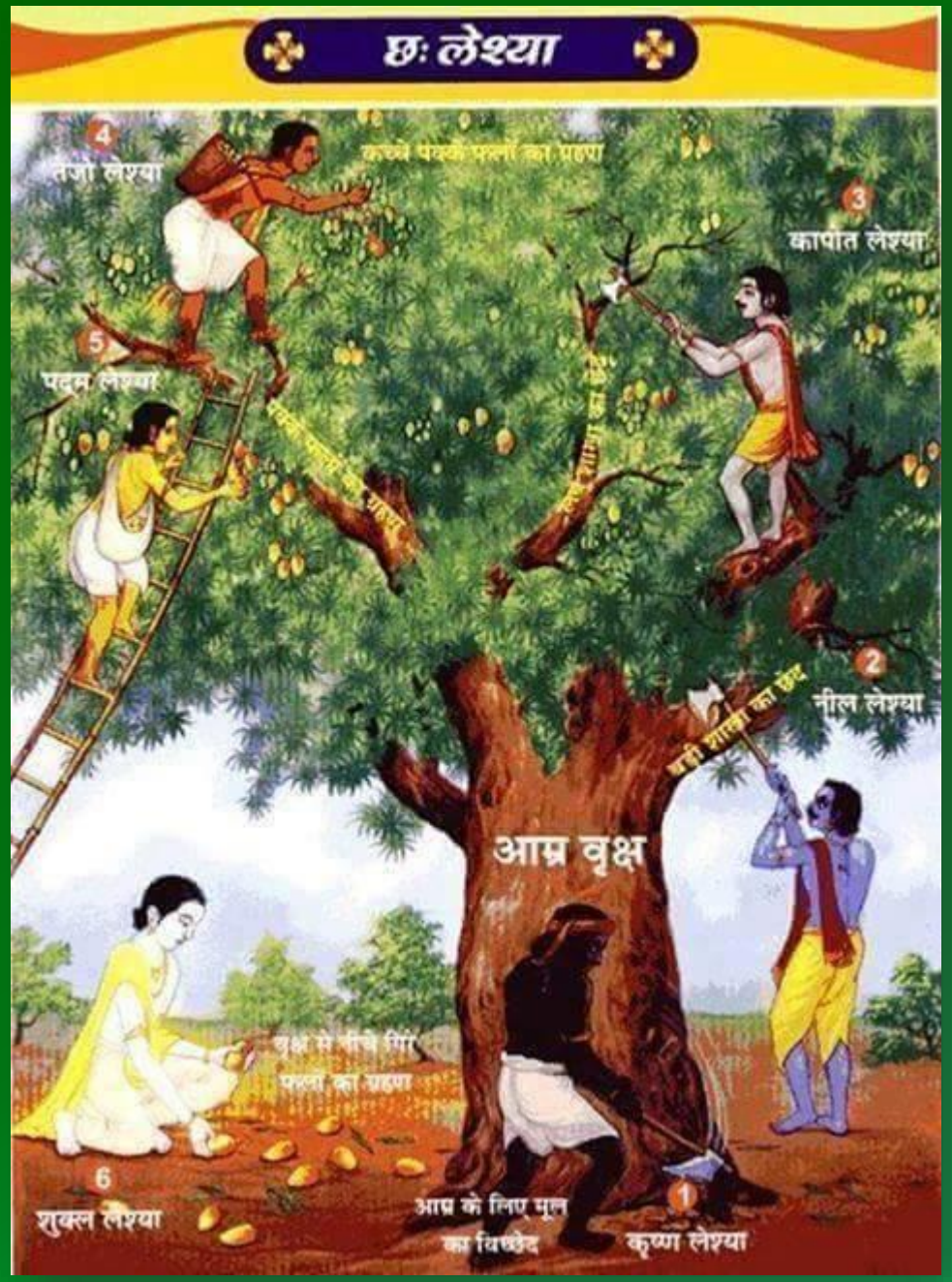

कषाय और शरीर नाम कर्म के उदय से

6 लेश्याएँ

- कृष्ण लेश्या
- नील लेश्या
- कापोत लेश्या
- पीत लेश्या
- पद्म लेश्या
- शुक्ल लेश्या

शेष

मिथ्यादर्शन	दर्शन मोह का उदय
अज्ञान	ज्ञानावरण का उदय
असंयम	चारित्र मोह का उदय
असिद्धत्व	कर्म मात्र का उदय

औदयिक भाव तो और भी हैं फिर उन सबका यहाँ ग्रहण क्यों नहीं किया ?

शेष का अंतर्भाव इन 21 प्रकृतियों में ही हो जाता है ।

वेद	हास्यादि
गति	वेदनीय, आयु, गोत्र
मिथ्यादर्शन	दर्शनावरण आदि

कौन-से औदयिक भाव में कौन-सा कर्म गर्भित है?

ज्ञानावरण	• अज्ञान
दर्शनावरण	• मिथ्यादर्शन
दर्शन मोहनीय	• मिथ्यादर्शन
चारित्र मोहनीय	• वेद, असंयम
आयु, नाम, गोत्र, वेदनीय	• गति

जीवभव्याभव्यत्वानि च॥7॥

❁जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व 3 प्रकार के पारिणामिक भाव हैं

पारिणामिक भाव

कर्मों की उपाधि से रहित ऐसा

जो परिणाम में हुआ भाव है

वह पारिणामिक भाव कहलाता है |

पारिणामिक भाव

जीवत्व	•चैतन्य परिणाम
भव्यत्व	•सम्यग्दर्शन प्रगट होने की योग्यता
अभव्यत्व	•सम्यग्दर्शन न प्रगट होने की योग्यता

भव्य

निकट भव्य

शीघ्र ही मोक्ष प्राप्त करेगा

दूर भव्य

कुछ समय बाद मोक्ष प्राप्त करेगा

दूरान्दूर भव्य

योग्यता होने पर भी जो मोक्ष नहीं प्राप्त करेगा

कर्म का

औपशमिक	क्षायिक	मिश्र (क्षायोपशमिक)	औदयिक	पारिणामिक
उपशम (दबना)	क्षय (अत्यन्त वियोग)	क्षयोपशम (फल, दबना, वियोग एक साथ)	उदय (फल)	कर्म-निरपेक्ष

संबंधित कर्म

औपशमिक	क्षायिक	मिश्र (क्षायोपशमिक)	औदयिक	पारिणामिक
मोहनीय	4 घातिया	4 घातिया	8 कर्म	-

5 भावों के स्वामी कौन कौन हैं?

पारिणामिक	औदायिक	क्षायोपशमिक	क्षायिक	औपशमिक
समस्त जीवों में	समस्त संसारी जीवों में	12 गुणस्थान वर्ती जीवों तक	सिद्ध, अरहंत, क्षायिक सम्यग्दृष्टि	औपशमिक सम्यक्त्व, चारित्र वाले जीवों के

5 भावों के काल

सादी	• स+आदि=जिसकी शुरुआत हुई है
सांत	• स+अंत=जिसका अंत हुआ है
अनादी	• अन+आदि जिसकी शुरुआत नहीं हुई है
अनंत	• अन+अंत=जिसका अंत नहीं है

5 भावों के काल

औपशमिक	क्षायिक	क्षायोपशमिक	औदयिक	पारिणामिक
सादी सांत	सादी सांत/सादी अनंत	सादी सांत/ अनादि सांत	सादी सांत/ अनादी अनंत	अनादि अनंत/ अनादी सांत (भव्यत्व)
अंतर्मुहूर्त	33 सागर+2 पूर्व कोटि कुछ कम			

हेय-उपादेय

औपशमिक	क्षायिक	मिश्र (क्षायोपशमिक)	औदयिक	पारिणामिक
एकदेश उपादेय	प्रकट करने योग्य उपादेय	एकदेश उपादेय	हेय	आश्रय करने योग्य परम उपादेय

5 भाव समझने से लाभ

पारिणामिक

- स्वभाव कभी नष्ट नहीं हुआ है और न होगा, इसमें अपनत्व से ही सुख की प्राप्ति होगी |
- आत्म निर्भरता आती है |

औदयिक

- यद्यपि ये रागादी भाव मेरे हैं पर कर्म सापेक्ष हैं मेरा स्वभाव नहीं हैं |
- स्वभाव से शुद्ध होने पर भी कर्म सम्बन्ध से विकार पर्याय में है|

5 भाव समझने से लाभ

क्षायिक

- पुरुषार्थ से विकार नष्ट होता है |
- एक बार विकार नष्ट होने पर पुन: विकार नहीं आता, स्वभाव बना रहता है|

क्षायोपशमिक

- किसी भी दशा में स्वभाव की व्यक्तता का पूर्णत: अभाव नहीं होता है |
- अनादि से विकार करता हुआ भी जीव जड़ नहीं होता है |

औपशमिक

- सबसे पहले श्रद्धा सम्बन्धी शुद्धा प्राप्त होती है |
- पारिणामिक भाव के आश्रय से विकार दूर होना शुरू होता है |

- Reference : श्री गोम्मटसार जीवकाण्डजी, श्री जैनेन्द्रसिद्धान्त कोष, तत्त्वार्थसूत्रजी

- Presentation created by : Smt. Sarika Vikas Chhabra
- For updates / comments / feedback / suggestions, please contact

  - sarikam.j@gmail.com
  - ☎: 9406682889